पीएच0डी0 प्रवेश परीक्षा

MPET पाठ्यक्रम

हिन्दी

नोट : 100 बहुविकल्पी प्रश्न (बहुविकल्पी टाइप, सुमेलित टाइप, सत्य/असत्य–कथन, कारण टाइप) होंगे, जिनका अंक 100 होगा (100x1 = 100)

(बहुविकल्पी प्रश्न)

1 हिन्दी भाषा और उसका विकास

अपभ्रंश (अवहट्ठ सहित) और पुरानी हिन्दी का संबंध, काव्यभाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास, काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा का उदय और विकास, साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उदय और विकास , मानक हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक विवरण (रूपगत), हिन्दी बोलियाँ – वर्गीकरण तथा क्षेत्र, नागरी लिपि का विकास और उसका मानकीकरण।

हिन्दी प्रसार के आन्दोलन, प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान, राजभाषा के रूप में हिन्दी।

हिन्दी भाषा–प्रयोग के विविध रूप –बोली, मानकभाषा, सम्पर्कभाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा, संचार माध्यम और हिन्दी ।

2 हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य का इतिहास–दर्शन, हिन्दी साहित्य के इतिहास–लेखन की पद्धतियाँ।

हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रन्थ, हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक केन्द्र, संस्थाएँ एवं पत्र–पत्रिकाएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल–विभाजन और नामकरण ।

आदिकाल: हिन्दी साहित्य का आरम्भ कब और कैसे ? रासो–साहित्य, आदिकालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरो की हिन्दी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली, आरम्भिक गद्य तथा लौकिक साहित्य।

मध्यकाल: भक्ति–आन्दोलन के उदय के सामाजिक–सांस्कृतिक कारण, प्रमुख निर्गुण एवं सगुण सम्प्रदाय, वैष्णव भक्ति की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, आलवार सन्त, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य, भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तःप्रादेशिक वैशिष्ट्य।

हिन्दी सन्त काव्य : सन्त काव्य का वैचारिक आधार, प्रमुख निर्गुण सन्त कवि–कबीर, नानक, दादू, रैदास। संत काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, भारतीय धर्म साधना में सन्त कवियों का स्थान।

हिन्दी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य – मुल्ला दाऊद (चन्दायन), कुतुबन (मिरगावती) , मंझन (मधुमालती), मलिक मुहम्मद जायसी (पदमावत), सूफी प्रेमाख्यानकों का स्वरूप, हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ।

हिन्दी कृष्ण काव्य : विविध सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्ण–भक्त कवि और काव्य, सूरदास (सूरसागर), नन्ददास (रास पंचाध्यायी), भ्रमरगीत परम्परा, गीति परम्परा और हिन्दी कृष्ण काव्य – मीराँ और रसखान।

हिन्दी राम काव्य : विविध सम्प्रदाय, राम भक्ति शाखा के कवि और काव्य, तुलसीदास की प्रमुख कृतियाँ, काव्य रूप और उनका महत्व।

रीति काल : सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, रीतिकाव्य के मूल स्रोत रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्रियाँ, रीतिकालीन कवियों का आचार्यत्व, रीतिमुक्त काव्यधारा, रीतिकाल के प्रमुख कवि : केशवदास, मतिराम, भूषण, बिहारीलाल, देव, घनानन्द और पद्माकर, रीतिकाव्य में लोकजीवन।

आधुनिक काल : हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास।

भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य, 1857 की राज्य क्रान्ति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतेन्दु और उनका मण्डल, 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की हिन्दी पत्रकारिता।

द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण और सरस्वती, मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छन्दतावाद और उसके प्रमुख कवि।

छायावाद और उसके बाद : छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, छायावाद के प्रमुख कवि : प्रसाद, निराला, पन्त और महादेवी, उत्तर छायावादी काव्य और उसके प्रमुख कवि, प्रगतिशील काव्य और उसके प्रमुख कवि, प्रयोगवाद और नई कविता के कवि, समकालीन कविता, समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता।

3 हिन्दी साहित्य की गद्य विधाएँ

हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्द पूर्व उपन्यास, प्रेमचन्द और उनका युग, प्रेमचन्द के परवर्ती प्रमुख उपन्यासकार : जैनेन्द्र , अज्ञेय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, यशपाल, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, नरेश मेहता, श्रीलाल शुक्ल, राही मासूम रजा, रांगेय राघव, मन्नू भण्डारी।

हिन्दी कहानी : बीसवीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आन्दोलन।

हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक और रंगमंच, विकास के चरण और प्रमुख नाट्यकृतियाँ : अंधेर नगरी, चन्द्रगुप्त , अंधायुग, आधे–अधूरे, आठवां सर्ग, हिन्दी एकांकी।

हिन्दी निबन्ध : हिन्दी निबन्ध के प्रकार और प्रमुख निबन्धकार – रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई।

हिन्दी आलोचना : हिन्दी आलोचना का विकास और प्रमुख आलोचक : रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी , रामविलास शर्मा, डॉ0 नगेन्द्र, डॉ0 नामवर सिंह, विजयदेव नारायण साही।

हिन्दी की अन्य गद्य विधाएँ : रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा–साहित्य, आत्मकथा, जीवनी और रिपोर्ताज़।

4 काव्यशास्त्र और आलोचना

भरत मुनि का रस सूत्र और उसके प्रमुख व्याख्याकार।

रस के अवयव ।

साधारणीकरण ।

शब्द शक्तियाँ और ध्वनि का स्वरूप।

अलंकार – यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति अन्योक्ति समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, दृष्टान्त, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, विभावना, असंगति तथा विरोधाभास।

रीति, गुण, दोष ।

मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक और बिम्ब।

स्वच्छन्दतावाद और यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता।

समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ : विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अन्तर्विरोध (पैराडॉक्स), विखण्डन (डीक्नस्ट्रक्शन)

भाग द्वितीय

खण्ड (क)

आदिकाल : सिद्ध, जैन, नाथ साहित्य, रासोकाव्य।

भक्तिकाल : भक्ति–काव्य का स्वरूप, भेद, निर्गुण–सगुण का सम्बन्ध, साम्य और वैषम्य।

कबीर : भक्ति–भावना, रहस्यवाद, समाज–दर्शन, काव्यकला।

जायसी : सांस्कृतिक दृष्टि, लोकतत्व, प्रेम–भावना, रूपक तत्व, कथानक रूढ़ि, काव्यदृष्टि।

सूरदास :	भक्तिभावना, शृंगार वर्णन, वात्सल्य वर्णन, भ्रमरगीत–अन्तर्वस्तु और विदग्धता, लोकतत्व।
तुलसीदास:	भक्ति–भावना, दर्शन, सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, लोकमंगल, युगबोध, काव्यदृष्टि।
मीरा :	भक्ति, विद्रोह भावना, गीतितत्व।
रीतिकाल :	दरबारी संस्कृति, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, विविध काव्य धाराएँ।
केशव :	आचार्यत्व, काव्य दृष्टि, संवाद–योजना, छंदयोजना।
बिहारी :	सौन्दर्य–भावना, बहुज्ञता, काव्यकला।
घनानन्द :	स्वच्छन्द मार्ग, सौन्दर्य दृष्टि, प्रेमव्यंजना, काव्य दृष्टि।
भूषण :	राष्ट्रीय चेतना और युगबोध, वीररस व्यंजना, काव्य कला, नीतिकाव्य परम्परा एवं प्रमुख कवि – रहीम, वृन्द, गिरिधर कविराय

खण्ड (ख)

आधुनिक काव्य

आधुनिकता : अवधारणा और उसके उदय की पृष्ठभूमि, हिन्दी पुनर्जागरण और भारतेन्दु।

महावीरप्रसाद द्विवेदी : नवजागरण, काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त।

छायावाद : स्वच्छन्दतावाद और छायावाद, सामाजिक – सांस्कृतिक दृष्टि, स्वाधीनता की चेतना, गाँधी का प्रभाव, अन्तर्धाराएँ, राष्ट्रीय काव्य धारा।

प्रसाद : जीवन–दर्शन, सांस्कृतिक दृष्टि, सौन्दर्य चेतना, कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ।

पन्त : कल्पनाशीलता, प्रकृतिचित्रण, काव्य यात्रा, काव्य भाषा।

निराला : सामाजिक–सांस्कृतिक दृष्टि, प्रगति चेतना, मुक्त छंद, निराला के प्रयोग के विविध आयाम।

महादेवी : रहस्यानुभूति, वेदना तत्व, प्रगीति, प्रतीक एवं बिम्ब

वैचारिक पृष्ठभूमि, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद।

प्रगतिवाद : सामाजिक दृष्टि, नागार्जुन–यथार्थ चेतना और लोकदृष्टि।

केदारनाथ अग्रवाल – प्रकृति चित्रण ओर सौन्दर्य बोध, शमशेर–काव्यानुभूति और सौन्दर्य दृष्टि।

प्रयोगवाद : व्यष्टि चेतना, अज्ञेय –प्रयोग धर्मिता और काव्यभाषा ।

नयी कविता : व्यष्टि समष्टि बोध, मुक्तिबोध–समाजबोध, फैंटेसी।

समकालीन कविता : काल संसक्ति और लोक संसक्ति, रघुवीर सहाय – राजनीतिक चेतना, काव्य भाषा, कुँवर नारायण – मिथकीय चेतना, काव्य दृष्टि।

खण्ड (ग)

गद्य साहित्य

मध्यवर्ग का उदय और उपन्यास, उपन्यास और यथार्थ।

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास : परीक्षा गुरु, चन्द्रकान्ता – वस्तु और शिल्प।

प्रेमचन्द युगीन उपन्यास : गोदान – मुख्य पात्र, यथार्थ और आदर्श।

गोदान और भारतीय किसान, महाकाव्यात्मकता, वस्तु–शिल्प वैशिष्ट्य।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास : शेखर एक जीवनी – मनोवैज्ञानिक आयाम, वस्तु शिल्पगत वैशिष्ट्य, मैला आँचल – वस्तुशिल्प, आंचलिकता, बाणभट्ट की आत्मकथा – इतिहास और संस्कृति चेतना, निपुणिका और नारी मुक्ति की आकांक्षा, भाषा–शिल्प वैशिष्ट्य।

कहानी और प्रमुख कहानीकार : प्रेमचन्द और प्रसाद की कहानी कला।

प्रेमचन्दोत्तर कहानी – नयी कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी–संवेदना और शिल्प,

कथा साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श।

हिन्दी नाटक और भारतेन्दु : भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी, यथार्थ बोध।

प्रसाद के नाटक : चन्द्र गुप्त, ध्रुवस्वामिनी, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना, नाट्य शिल्प।

प्रसादोत्तर नाटक : अंधा युग, आधे–अधूरे – आधुनिकता बोध, प्रयोगधर्मिता और नाट्यभाषा।

निबन्ध और प्रमुख निबन्धकार : बालकृष्ण भट्ट, रामचन्द्र शुक्ल–चिन्तामणि, अन्तर्वस्तु और शिल्प।

शुक्लोत्तर निबन्ध और निबन्धकार : हजारीप्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र, संस्कृति बोध, लोक–संस्कृति।

खण्ड (घ)

काव्यशास्त्र और आलोचना

काव्यलक्षण, काव्यहेतु, काव्यप्रयोजन, काव्यभेद।

प्रमुख सिद्धान्त – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य।

रस निष्पत्ति, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा।

हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास।

आधुनिक हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियाँ – शास्त्रीय, व्यक्तिवादी, ऐतिहासिक, तुलनात्मक, प्रभाववादी,मनोविश्लेषणवादी सौन्दर्यशास्त्रीय, शैली वैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय।

प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त तथा अरस्तू का विरेचन सिद्धान्त।

लौंजाइनस : काव्य में उदात्त तत्व।

क्रोचे का अभिव्यंजनावाद।

वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषा सिद्धान्त।

कॉलरिज की कल्पना और फैंटेसी।

आई०ए० रिचर्ड्स – सम्प्रेषण सिद्धान्त।

टी0एस0 इलिएट – निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त।

संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद, आधुनिकता, उत्तरआधुनिकता, विखण्डनवाद।

खण्ड (ङ0)

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्यपुस्तकें तथा पाठ्यांश –

कबीर	–	हजारीप्रसाद द्विवेदी –दोहा–पद संख्या 160–209।
जायसी	–	पद्मावत– सं0 वासुदेवशरण अग्रवाल–नागमती वियोग खण्ड ।
सूरदास	–	भ्रमरगीत सार–सं0 रामचन्द्र शुक्ल छन्द संख्या 21–70।
तुलसीदास	–	उत्तरकाण्ड, रामचरित मानस – गीताप्रेस, गोरखपुर।
प्रसाद	–	कामायनी – श्रद्धा, इड़ा सर्ग।
निराला	–	राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता।
अज्ञेय	–	असाध्यवीणा, नदी के द्वीप।
मुक्तिबोध	–	अँधेरे में ।
प्रेमचन्द	–	गोदान ।
अज्ञेय	–	शेखर एक जीवनी, भाग 1 – 1
प्रसाद	–	चन्द्रगुप्त ।
मोहन राकेश	–	आधे – अधूरे।

(डॉ0 देवेन्द्र कुमार सिंह गौतम)

विभागाध्यक्ष